आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received:05/03/2023; Accepted:08/03/2023; Reviewed: 20/03/2023; Published:24/03/2023

आधुनिक हिन्दी साहित्य मे महिला सहित्यकारों का योगदान

- डॉ.सुधा मनी,
सहायक प्राध्यापक
रेस कोर्स रोड़,
बैंग्लोर-560001
मोबाइल: 8971843352
ई मेल: sudhamani905@gmail.com

डॉ.सुधा मनी, आधुनिक हिन्दी साहित्य मे महिला सहित्यकारों का योगदा, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 2/मार्च 2023, (163-168)

प्रस्तावना:

स्त्री शक्ती का ध्योतक है। साहित्यकारों ने उसे प्रकृती के साथ तुलना की है। कन्नड में एक कहावत है, "ಸ್ತ್ರೀ ಒಲಿದರೆ ನಾರಿ, ಮುನಿದರೆ ಮಾರಿ"| वह सवालों को एक हद तक सहन कर सकती है, फिर वह अपनी असली अवतार का दर्शन करती है। लेकिन आदिकाल से ही इस पुरुष प्रधान देश मे कितनी सन्घर्ष, अत्याचारों का सामना करना पडा। कई महिला साहित्यकारों ने अपने कलम नामक तलवार द्वारा हल करने का प्रयास की है। इसके प्रतिफल के रूप में, आजकल आधुनिक नारी हर एक क्षेत्र में प्रगति पथ पर जा रही है। आजकल स्त्री, अबला नही है, सबला है। वह किसी का परवाह नहीं करती, किसी सवाल का परवाह करती। वह अपनी ध्येय की साधना करने के लिए उत्सुकता से आगे बढ रही है।

समाज के हित के लिए रचित होनेवाली लिखित प्रणाली को ही साहित्य कहते है। सहित्य समाज का दर्पण होता है तो सहित्यकार समाज का दर्पणकार है। वह हर एक पल अपने चारों तरफ बसा हुआ समाज का अध्ययन करते हुए समाज के समस्याओं को अपने साहित्य द्वारा हल करने का प्रयास रहता है।

स्त्री शक्ती का संकेत है। नारी का जीवन बहुत ही संघर्ष विरत है। अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में, विभिन्न पात्रों का स्थान भरकर अपनी जिम्मेदारी को तहदिल से, प्राचीन काल से आज तक निभा रही है। लेकिन यह पुरुष प्रधान समाज में स्त्री पर विभिन्न रूपों से अत्याचार हो रहा है। स्त्री तो जितनी शक्तिशालि , चालाक, चतुर, होते हुए भी, समस्या को सामना करने में उसे थोडा सा कठिण लगता है। उस समय साहित्य के द्वारा , हिम्मत से सामना करने की क्षमता प्रप्त कर सकती है। सामना करने की ग्यानकारी प्राप्त कर सकती है। स्त्री चेतना को आगे बढाने में हमारे महिला साहित्यकारों का योगदान अत्यमूल्य माना गया है।

साहित्य के क्षेत्र में , जहाँ महाकवियों ने साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की वहाँ महिलाओं ने भी अपनी अमूल्य कृतियों से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया ,परन्तु यहाँ पुरुषों की भाँति स्त्रियों की शिक्षा - दीक्षा का अभाव रहा ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य क्षेत्र मे कई महिला साहित्यकरों ने अपने अमूल्य साहित्य द्वारा कई समस्याओं का हल करते हुए साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों मे, नाटक, कहानी, उपन्यास में अपना योगदान दिया है। आधुनिक काल मे नाव जाग्रुती तथा नव चेतना का आरंभ हुआ। नारियों की चिन्तन- मंथन की दिशा बदल गई। महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा का आरंभ हुआ।नवीनतम भावनाओं को जन्म दिया। साहित्य की विभिन्न विधाओं पर आधुनिक महिला सहित्यकारो ने अपनी कलम चलाई।

आधुनिक युगा की प्रप्रथम महिला कवयत्री है श्रीमती सुभद्रा कुमरी चौहान। इन्होने अपने सहित्य मे देश-भक्ति को प्रधानता दी। अपने साहित्य के द्वारा समाज मे देश-भक्ती का झलक प्रदान की तथा समाज को सन्मार्ग पर ले जाने की प्रयास की।

छायावाद युज के प्रमुख कवयत्री है श्रीमती महादेवी वर्मा। महादेवी वर्मा की गीत अत्यंत लोकप्रिय एवम हिन्दी साहित्य के अमूल्य निधी है। वर्मा जी अपने साहित्य में सेवा मनोभावना, गुरु भक्ति, प्रक्रु के प्रती आदरता की भावना, शिक्षा की प्रामुक्यता को समाज मे प्रसार करने द्वारा अपना अमूल्य योगदान दिया है।

आधुनिक युग में महिला साहित्यकारों ने साहित्य विभिन्न क्षेत्रों मे अपनी लेखन चलाई। इन महिला साहित्यकारों मे विशेष रूप से मन्नू भण्डारी, क्रुश्ना सोबती, चित्रा म्रुदुगल, श्रीमती विध्यावती कोकिला, तारा पाण्डेया, सुभद्रा कुमारी सिन्हा, राजेश्वरी देवि, रजनी पणिक्कर, आदि का नाम विशेष रूप मे उल्लेख्नीय है।

हिन्दी कथा साहित्य में नारी जागरुकता एवं दलित चेतना को स्वर देने वाली लेखिका चित्रा मुद्गल ने लक्षागृह, अपनी वापसी, इस हमाम में, जिनावर, भूख, लपटें जैसी कहानियाॅ लिखकर सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक समस्याओं को निर्भीकता से उजागर किया। म्रुदुगल जी ने अपने कलम नामक तलवार से क्रूर समज के कुरूतियों पर प्रबल प्रहार किया। हिन्दी कथा साहित्य में नारी जागरुकता एवं दलित चेतना को स्वर देने वाली

लेखिका चित्रा मुद्गल ने लक्षागृह, अपनी वापसी, इस हमाम में, जिनावर, भूख, लपटें जैसी कहानियाॅ लिखकर सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक समस्याओं को निर्भीकता से उजागर किया |

इस प्रकार चित्रा मुदुगल ने समाज मे स्त्री को समस्याओं को निर्भिकाता से सामना करने की चेतावनी देते हुए अपना अमूल्य योगदान दिया है।

मनुष्य समाज जीवी है। उसके मन मे हरेक पल कई भावनाएं उत्पना होती रहती है। उन भावनाओं को वह अन्य आदमी के समक्ष अभिव्यक्त किये बिना वह चैन से नहीं रह सकता। अकेलेपन एक दंड के जैसे है। मन्नू भण्डारी से रचित "अकेली" नामक कहानी में पती से तन-मन से दूर ,संतानहीन सोमा बुआ की अकेलेपन की यातना कचोटती है। दुर्भाग्य से बुआ को अनेक प्रकार के दु:ख झेलना पडा है। जवान बेटे हरखू की मौत से उसका संसार उजड गया है। पती इस आघात से सन्यासी बन जाता है। पर सभी दुष्टी से आहत बचने के लिए गांव भर के लोगों के शुभकार्यों मे दिना-रात खटती रहती है। पर वहां भी उसकी सेवा की कद्र नही होती। उसके भाग्य में केवल उपेक्षा और उपहास्य ही बदा है। वृद्धावस्था की करुणा तथा दयनीय स्थिति का मम्मस्पर्षी चित्रण हुआ है।यह व्यथा केवल सोमा बुआ का ही नही, हर एक उपेक्षित वृद्ध की दशा है। मन्नू भण्डारी जी नेतीन निगाहों की एक तस्वीर, त्रिशंकु, रानी मां का चबूतरा आदि लोकप्रिय कहानियां लिखी। उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानियों में देषी- विदेषी संस्कृति की टकराहट, आदमी का अकेलापन, विघटित परिवार की छटपटाहट जैसी समस्याओं को विषेष स्थान दिया है। रिटायर्ड गजाधर बाबू के जीवन पर आधारित कहानी 'वापसी' पर 1960 में सर्वश्रेष्ठ कहानीकार का पुरस्कार मिला। इसके अतरिक्त उन्होंने जिन्दगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठा लिखकर साहित्य के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। कहानी के क्षेत्र में षिवानी के महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन्होंने लाल हवेली, पुष्पहार, अपराधिनी, रतिविलाप, रथ्या, स्वंयसिद्धा लिखा

इस प्रकार मन्नू भंडारी ने अपने साहित्य द्वारा स्त्री पात्रों मे सेवा-मनोभावना का झलक, समस्या को सामना करने की क्षमता, विभिन्न विषय का उद्धार करने द्वारा अपना योगदान दिया है।

स्त्री कितनी सुंदरी शिक्षित, चतुर तथा बुद्धिमती होते हुए भी इस पुरुष प्रधान समाज में पुरुष के अहं एवं दमन चक्र मे पीसती स्त्री की व्यथा चिन्ताजनक लगता है। सुधा आरोडा द्वार रचित "रहोगी तुम नहीं" कहानी में इस विषय का वर्णन मिलता है। पत्नी सुंदर, एम.ए. मे गोल्ड मेडलिस्ट, अच्छी चित्रकार, संगीत विशारद है, किंतु विवाह के बाद वह सिर्फ अपनी पती की इच्छानुसार नाचनेवाली कठुपुतली मात्र बनकर रह जाती है। अच्छी तरह से अपने कर्तव्य पालन करने पर भी पती परमेश्वर न कभी त्रुप्त होता है न कभी पत्नी से दो स्नेहा के बात करता है। विडम्बना यह है कि पती ही नही, न कभी मनुष्य बना, न कभी सुधारा।

सुधा आरोडाजी ने अपने साहित्य में स्त्री अपनी शक्ती को पहचान कर प्रगती-पथ पर चलने की चेतावनी देते हुए अपना अमूल्य योगदान दिया है।

महिला कहानीकारों में नमिता सिंह की कहानी निकम्मा लड़का, जंगल गाथा, खुले आकाष के नीचे, राजा का चैक आदि विषेष सराहनीय है।

इसी तरह मणिक मोहनी ने अपना सच, अभी तलाषी जारी है, अन्वेणी, ढाई आखर प्रेम का कहानी लिखकर समाज का दर्षन कराया।

महान कहानीकार ममता कालिया की कहानियां छुटकारा, एक अदद औरत, सीन नं0 6, उसका यौवन मुखौटा हिन्दी पाठकों की संख्या बढ़ा रही है। लेखिका का मानना है कि आज सम्बन्धों के मूल्य और अर्थ बदले नहंी बल्कि नष्ट हो गए हंै1। शषि प्रभा शास्त्री की कहानियां उस दिन भी, पतझड़, अनुत्तरित, धुली हुई शाम एक टुकड़ा शान्तिरथ साहित्य जगत में अपना स्थान बना ली है। नारी के प्रसव पीड़ा का मार्मिक वर्णन जया जादवानी के कहानी संग्रह अन्दर की पानियों से झांकता पानी में मिलता है। किस प्रकार स्त्री प्रसव की असहनीय पीड़ा को झेलकर सृष्टि क्रम को आगे बढ़ातीे है।

स्त्री कितनी सशक्त होते हुये भी अपनी विभिन्न आयु में प्रकृतिक पीडा से झेलना ही पडता है। इस विषय की प्रस्तावना को व्यक्त करने द्वारा श्रीमती शशि प्रभा शास्त्री ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। स्त्री समस्याओं को चित्रित करने में मैंत्रेयी पुष्पा ने गहनता का परिचय दिया है। स्वंय उन्हीं के शब्दों में 'रेषा-रेषा धुनी जाती, पुर्जा-पुर्जा नुचती और देहरी-देहरी पर अपमानित होती हुई औरत की वे खौफनाक कथायें क्यों नही लिखी जाती जो आजाद भारत के चप्पे-चप्पे पर चस्पा है। मैत्रेयी पुष्पा के प्रमुख कहानियों में चिन्हार ललमनियां, गोमा हंसती है। जिसमें नारी की समस्याओं के साथ-साथ कोमलता का चित्रण भी मिलता है।

इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पाजी ने स्त्री के विभिन्न समस्याओं का चित्रण बहुत सुंदर से व्यक्त करने द्वार अपना अमूल्य योगदान दिया है।

अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों एवं अलंकारों से सम्मानित कृष्णा सोबती ने स्त्री जीवन एवं आंचलिकता पर विषेष ध्यान दिया। बादलों के घेरे, सिक्का बदल गया कहानी लिखी। इनकी कहानियां सेक्स जन्य भावुकता से युक्त है। सोबती जी साहित्य वर्गीकरण को पुरूष लेख और स्त्री लेख के रूप में स्वीकार नहीं करती है। उनका विचार है कि- "किसी की रचनात्मक एवं कलात्मक कृति को प्रस्तुत करने वाले लेखक कलाकार में स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों का मिश्रण रहता है। बौद्धिक रूप से मानवीय संवेदना के दोनों रंग और रूप कृतित्व के स्वरूप में मिले जुले रहते है।'1मंजुल भगत ने आत्महत्या के पहले, गुलमोहर के गुच्छे, सफेद कौआ, बूंद, अंतिम बयान आदि कहानियां लिखकर हिन्दी की सेवा की।

इस प्रकार कृष्ना सोबतीजी ने वास्तविकता का झलक को अपने साहित्य में अंकित करने द्वारा योगदान दिया है।

मुस्लिम समाज में पुरुषों द्वारा महिलाओं पर किए जा रहे अत्याचार का विरोध हिन्दी लेखिका नासिरा शर्मा ने कहानी के माध्यम से किया। नासिरा शर्मा ने पत्थर गली, शामी कागज, इब्ने मरियम, खुदा की वापसी,

दूसरा ताजमहल कहानी लिखा। दूसरा ताजमहल में महिलाओं के मानसिक बलात्कार का चित्रण किया है। इन्होंने अपने कहानियों के माध्यम से ईराक एवं ईरान देष की महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को उजागर किया है।

नासिरा शर्मा जी ने अपने साहित्य मे समस्या का चित्रण करने द्वारा योगदान दिया है।

उषा यादव ने ज्वलंत विषयों पर पुस्तक लिखकर जन-जन का ध्यान आकर्षित किया। इसके साथ-साथ बाल कहानियां लिखकर हिन्दी साहित्य के साथ-साथ समाज में भी अमूल्य योगदान दिया। उषा यादव का कहना है कि- महिलाएं आज निर्भीकता पूर्वक लेखनी चला रही है। आज महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान सिद्ध कर रही है। इसके लिए महिला संगठन सहयोग प्रदान कर रहा है।

उशा यादव ने अपने साहित्य मे समस्या को हल करने का मार्ग भी प्रस्तुत करने द्वारा अपना अमूल्य योगदान दिया है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आज महिलायें प्रत्येक क्षेत्र की तरह हिन्दी साहित्य में भी योगदान कर रही है। हाथ में कलम लिए महिला साहित्यकारों की एक विषाल फौज सामने खड़ी है। उनमें प्रमुख है- मधु ककरिया (अंतहीन मरूस्थल, बीतते हुए), लवलीन (चक्रवात), साराराय (अबाबील की उड़ान, बिपावन), ऋता शुक्ला (कासौ कहौं में दर दिया, मानुष तन, क्रौचवध), चन्द्रकान्ता (सलाखों के पीछे, सूरज उगने तक, काली बर्फ), इन्दुबाली (अंधेरे की लहर, धरातल, चुभन, पांचवा युग), सूर्यबाला (थाली भर चांद, दिषाहीन में, मानुष गंध, मुडेर पर) मेहरूनिसां परवेज (टहनियों पर धूप, फालगुनी, अंतिम चढ़ाई, समर, लाल गुलाब), राजी सेठ (अंधे मोड़ से आगे, गमे हयात ने मारा, तीसरी हथेली), मृणाल पाण्डेय (दरम्यान, शब्दबेधी, पंडरपुर पुराण, रास्तों पर भटकते हुए) एवं कांता भारती (रेत की मछली) महिला साहित्यकार अपने साहित्य में गुणात्मकता के स्तर को बढ़ाने के लिए विज्ञान एवं तकनीकी का सहयोग ले रही है, इन्हें अब मानवीय मूल्यों के साथ-साथ आर्थिक एवं राजनैतिक विषयों को बढ़ाना होगा।

समाज में सिर्फ स्त्री परक विचारों से ऊपर उठकर सामाजिक एवं आर्थिक समानता पर विचार करना होगा। वर्तमान युग में पर्यावरण प्रदूषण मानव जीवन के लिए खतरा बन चुका है। इसे हिन्दी साहित्य के सहारे जन-जन को सचेत करना होगा। अब सिर्फ हंगामा खेज लोकप्रियता के अपेक्षा सार्वभौमिक गुणों का तराषना होगा। जिससे समाज एवं देष के साथ-साथ हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

निष्कर्ष: आधुनिक स्त्री तो शिक्षित, चतुर, चालाक, बुद्धिमान, सामना करने की क्षमता रखनेवाली है। आधुनिक नारी समस्या के बारे में सोचने के अलाव, समस्या का कारण सोचती है, उसे हल करने का रास्ता ढूंढ़कर, उससे हल करने का प्रयास करती है। हर एक क्षेत्र में अपना पाव रखकर अपना योगदान दे रही है। यह विषय तो सराहनीय है। वह हमेशा प्रगतीशील पथ पर अग्रसर होती रहती है। हमेशा अपनी विकास पर सोचती रहती है। आजकल विभिन्न क्षेत्रों मे अपना अस्तित्व जमा लिया है। लेकिन मानवीय मूल्य घट्ता जा रहा है। यह बहुत

दु:ख की बात है। यदी आधुनिक मानव मानवीय मुल्यों को अपानाने से , इस धरती पर स्वर्ग का ्बारिश जरूर बरसेगा।

सन्दर्भ:

1. पुष्पा, मैत्रेयी, आजाद भारत और महिला लेखन, नया पथः स्वाधीनता विषेषांक,

2.गर्ग, मृदुला, चितकोबरा, नेषनल पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998

3.सोबती, कृष्णा, एक साक्षात्कार से।

4.अंतर्जाल

****